3.मुद्रा, बचत एवं साख

1. आवश्यकताओं के दोहरे संयोग से आप क्या समझते हैं? मुद्रा आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की समस्या का कैसे समाधान करती है ?

उत्तर - मुद्रा के आविष्कार के पूर्व वस्तु-विनिमय प्रणाली का प्रचलन था। इस प्रणाली में लोग विनिमय में अपनी वस्तुओं का प्रत्यक्ष आदान-प्रदान करते थे। लेकिन, वस्तु - विनिमय के अंतर्गत कम-से-कम ऐसे दो व्यक्तियों में संपर्क होना आवश्यक है जिनके पास एक-दूसरे की आवश्यकता की पूर्ति की वस्तुएँ हैं। इसे आवश्यकताओं का दोहरा संयोग कहा जाता है। परंतु, वास्तविक जीवन में इस प्रकार का संयोग होना अत्यंत कठिन है। मुद्रा के प्रयोग से यह कठिनाई दूर हो गई है। आज सभी वस्तुओं और सेवाओं का विनिमय मुद्रा के माध्यम से होता है।

2. मुद्रा मूल्य-मापन का कार्य कैसे करती है ?

उत्तर - आधुनिक अर्थव्यवस्था में हर वस्तु का मूल्य मुद्रा के रूप में व्यक्त किया जाता है। जैसे पचास रुपये किलोग्राम संतरा, पचीस रुपये दर्जन केला, चार हजार रुपये का मोबाइल, दस रुपये का बिस्कुट आदि । हर वस्तु अथवा सेवा का मूल्य रुपये में मापा और व्यक्त किया जाता है।

3. साख के गुण या लाभ बताएँ ।

उत्तर - आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं के संचालन में साख की भूमिका अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। इसने पूँजी को गतिशीलता प्रदान कर उद्योग और व्यापार के विकास में अभूतपूर्व योगदान किया है। साख के प्रचलन से पूँजी की उत्पादकता में वृद्धि होती है। साख द्वारा बैंकों अथवा लोगों के पास जमा धन ऐसे व्यक्तियों के पास पहुँच जाता है, जो इसका प्रयोग उत्पादक कार्यों में करते हैं। साख का प्रयोग होने से अधिकांश लेन-देन चेक आदि साख-पत्रों के माध्यम से होते हैं। इससे मुद्रा की आवश्यकता घट जाती है। साख-पत्रों का लेन-देन अधिक सुविधाजनक भी होता है। साख बचत एवं पूँजी निर्माण को भी प्रोत्साहित करती है।

4. साख- मुद्रा का सृजन किसके द्वारा किया जाता है?

उत्तर - साख-मुद्रा का सृजन देश के व्यावसायिक बैंकों के द्वारा किया जाता है। बैंकों द्वारा दिए गए ऋण से साख का सृजन होता है। ऋण खाते में प्राप्त मुद्रा का प्रयोग कोई व्यक्ति क्रय की गई वस्तु की मूल्य अदायगी के लिए कर सकता है। चेक तथा हुंडी साख-पत्र मुद्रा का कार्य करते हैं।

5. पत्र - मुद्रा क्या है ? भारत में इसे कौन जारी करता है?

उत्तर - पत्र - मुद्रा एक विशेष प्रकार के कागज पर लिखा हुआ प्रतिज्ञा-पत्र है जिसमें निर्गमन अधिकारी माँग करने पर उसमें अंकित राशि देने का वचन देता है। भारत में एक रुपया का नोट भारत सरकार द्वारा और इसको छोड़कर अन्य सभी प्रकार के नोट रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया द्वारा जारी किए जाते हैं।

6. साख-पत्र क्या है ? कुछ प्रमुख साख-पत्रों का उल्लेख करें।

उत्तर - साख-पत्रों से अभिप्राय उन पत्रों या साधनों से होता है जिनका साख- मुद्रा के रूप में प्रयोग किया जाता है। इन पत्रों के आधार पर ऋणों का आदान-प्रदान तथा वस्तुओं और सेवाओं का क्रय-विक्रय होता है। एक आधुनिक अर्थव्यवस्था के संचालन में साख-पत्रों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है तथा अधिकांश व्यापारिक लेन-देन इन्हीं के माध्यम से होते हैं। वास्तव में, मुद्रा नहीं होने पर भी साख पत्र मुद्रा के कार्यों का ही संपादन करते हैं। साख-पत्र एक प्रकार का लिखित प्रतिज्ञा - पत्र होता है। इसे लिखनेवाला व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति अथवा उसके द्वारा आदेशित व्यक्ति या वाहक को तत्काल अथवा एक निश्चित अवधि के पश्चात साख पत्र में उल्लेख की गई रकम अदा करने का वादा करता है। साख-पत्रों के कई प्रकार हैं जिनमें चेक, बैंक ड्राफ्ट, यात्री चेक, हुंडी या वादा-पत्र प्रमुख हैं।

7. बचत क्या है ?

उत्तर - बचत आय का वह भाग है जिसका वर्तमान में उपभोग नहीं किया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि किसी व्यक्ति की मासिक आय 20,000 रुपये है जिसमें से यदि 15,000 रुपये वह वस्तुओं एवं सेवाओं के उपभोग पर खर्च करता है तो शेष 5,000 रुपये उसकी बचत है। सूत्र के रूप में कुल आय - उपभोग व्यय = बचत है। बचत से सृजित पूँजी का निवेश उद्योग, व्यापार तथा अन्य उत्पादक क्रियाओं में किया जाता है।

8. किसी व्यक्ति की बचत करने की इच्छा किन बातों से प्रभावित होती है ?

उत्तर - किसी व्यक्ति की बचत करने की इच्छा कई बातों से प्रभावित होती है। वही व्यक्ति बचत कर सकता है जिसकी आय उसकी न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति से अधिक है। साथ ही, उस व्यक्ति में बचत करने की इच्छा भी होनी चाहिए। इतना ही नहीं, बचत के लिए अनुकूल वातावरण का होना नितांत आवश्यक है। गृहयुद्ध, बाह्य आक्रमण की संभावना तथा संपत्ति के असुरक्षित रहने का खयाल आते ही व्यक्ति में बचत करने की इच्छा बहुत कम हो जाती है।

9. मुद्रा की परिभाषा दीजिए।

उत्तर - मुद्रा विनिमय का माध्यम है तथा विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने इसकी अलग-अलग परिभाषा दी है। रॉबर्टसन के अनुसार, "मुद्रा वह वस्तु है जिसे वस्तुओं का मूल्य चुकाने तथा अन्य प्रकार के व्यावसायिक दायित्वों को निबटाने के लिए व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है।" मार्शल ने मुद्रा की परिभाषा देते हुए बताया है, "मुद्रा में वे सभी वस्तुएँ सम्मिलित की जाती हैं, जो बिना संदेह अथवा विशेष जाँच के वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने तथा खर्चों को चुकाने में साधारणतया प्रचलित रहती हैं। " परंतु, विभिन्न अर्थशास्त्रियों द्वारा दी गई मुद्रा की परिभाषाओं में हार्टले विदर्स की परिभाषा सबसे सटीक है। इनके अनुसार, “मुद्रा वह है, जो मुद्रा का कार्य करती हो।

10. "मुद्रा आधुनिक अर्थतंत्र की धुरी है।" विवेचना कीजिए ।

उत्तर - हमारी अर्थव्यवस्था में मुद्रा का स्थान बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है। मुद्रा के प्रयोग से उपभोग, उत्पादन, विनिमय, वितरण तथा राजस्व अर्थव्यवस्था के प्रत्येक क्षेत्र को बहुत लाभ हुआ है। यह उपभोक्ताओं को अपनी सीमित आय के द्वारा अधिकतम संतोष प्राप्त करने में सहायता करती है। उत्पादकों को भी मुद्रा से अनेक लाभ हुए हैं। मुद्रा के अभाव में बड़े पैमाने पर उत्पादन संभव नहीं था। आज मुद्रा विनिमय का सर्वमान्य साधन है तथा इसके प्रयोग से वस्तुओं का मूल्य निर्धारण एवं क्रय-विक्रय का कार्य अत्यंत सरल हो गया है। मुद्रा के रूप में सरकार को कर आदि लगाने में भी सुविधा होती है। इस प्रकार, मार्शल ने ठीक ही कहा है कि मुद्रा वह धुरी है जिसके चारों और संपूर्ण अर्थविज्ञान घूमता है।

मुद्रा, बचत एवं साख

1. वस्तु-विनिमय प्रणाली की प्रमुख समस्या क्या थी? मुद्रा ने इस समस्या को कैसे दूर किया?

उत्तर - मुद्रा के आविष्कार के पूर्व वस्तु-विनिमय प्रणाली का प्रचलन था। इस प्रणाली के अंतर्गत लोग विनिमय में अपनी वस्तुओं का प्रत्यक्ष आदान-प्रदान करते थे; जैसे-चावल देकर जुलाहे से कपड़ा लेना, गेहूँ से जूते का विनिमय करना इत्यादि। परंतु, वस्तु-विनिमय, अर्थात वस्तुओं के प्रत्यक्ष आदान-प्रदान में अनेक कठिनाइयाँ और असुविधाएँ थीं। इनमें सबसे प्रमुख आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की कठिनाई थी। वस्तु-विनिमय प्रणाली के अंतर्गत कम-से-कम ऐसे दो व्यक्तियों में संपर्क होना आवश्यक है जिनके पास एक-दूसरे की आवश्यकता की पूर्ति की वस्तुएँ हों। उदाहरण के लिए, मान लें कि एक किसान अपने गेहूँ के बदले कपड़ा लेना चाहता है। इस स्थिति में उसे एक ऐसे व्यक्ति की खोज करनी होगी जिसके पास कपड़ा हो और वह अपने कपड़े के बदले में गेहूँ लेना चाहता हो। इसे आवश्यकताओं का दोहरा संयोग कहा जाता है। परंतु, वास्तविक जीवन में इस प्रकार का संयोग होना बहुत कठिन है। संभव है कि जिस व्यक्ति के पास कपड़ा हो उसे गेहूँ की जरूरत नहीं हो। ऐसी अवस्था में इन दोनों के बीच विनिमय, अर्थात वस्तुओं का आदान-प्रदान संभव नहीं होगा।

इस प्रकार, वस्तु-विनिमय प्रणाली के अंतर्गत आवश्यकताओं का दोहरा संयोग होना अनिवार्य है। इस प्रणाली में विनिमय उसी अवस्था में संभव है जब दो व्यक्तियों की आवश्यकताएँ एक-दूसरे से मिलती हो। मुद्रा विनिमय के माध्यम का कार्य करती है तथा इसके प्रयोग से यह कठिनाई दूर हो गई है। मुद्रा या मौद्रिक विनिमय प्रणाली में कोई भी व्यक्ति अपनी वस्तु को बेचकर मुद्रा प्राप्त कर लेता है और उससे अपनी आवश्यकतानुसार विभिन्न वस्तुओं का क्रय करता है।

2. वस्तु-विनिमय प्रणाली की कमियों पर प्रकाश डालें।

उत्तर - वस्तु-विनिमय प्रणाली पुरातनकाल में प्रचलित थी, परंतु इस प्रणाली में निम्नलिखित कमियाँ थीं।

(i) दोहरे संयोग का अभाव - वस्तु-विनिमय प्रणाली में क्रेता एवं विक्रेता की जरूरतों में मेल आवश्यक था। इसे दोहरा संयोग कहते हैं। इसके अभाव में विनिमय संभव नहीं था। यदि आपको चावल चाहिए और देने के लिए आपके पास शहद है, तो आपको ऐसे ग्राहक की खोज करनी होगी जो शहद चाहता हो और बदले में चावल देने के लिए तैयार हो। क्रेता को ऐसे दोहरे संयोग के लिए काफी मेहनत करनी पड़ती थी।

(ii) मूल्य के समान मापक का अभाव - यह स्पष्ट नहीं होता था कि एक बोरा चावल के बदले कितना शहद दिया जाए या एक गाय का मूल्य कितनी टोकरी फल के बराबर होगा। ऐसे में कोई निर्णय करना दुष्कर कार्य था।

(iii) मूल्य-संचय का अभाव - लोगों का उत्पादन ही उनका धन था। इससे वे अन्य वस्तुओं का क्रय करते थे। किंतु, ये उत्पादन शीघ्र नष्ट होनेवाले होते थे; जैसे-फल, सब्जी, गेहूँ, दूध, शहद आदि। अतः, मूल्य-संचय इन स्वरूपों में नहीं किया जा सकता था।

(iv) विभाजन का अभाव - यदि किसी उपभोक्ता को एक गाय के बदले चार वस्तुएँ खरीदनी होती थीं, तो वह विनिमय के लिए गाय के चार टुकड़े नहीं कर सकता था।

(v) भविष्य में भुगतान की असुविधा - मान लीजिए कि किसी व्यक्ति ने एक क्विंटल चावल ऋण के रूप में लिया। ऋण की शर्त के अनुसार, वह सवा क्विंटल चावल एक वर्ष पश्चात लौटाएगा। ऋणदाता समय अवधि समाप्त हो जाने के बाद असंतुष्ट रहता था, क्योंकि मानक के अभाव में उसे कम गुणवत्ता वाला सवा क्विंटल चावल लौटाया गया।

3. मुद्रा से आप क्या समझते हैं? मुद्रा के क्या कार्य हैं?

उत्तर - मुद्रा वह वस्तु है जो विनिमय के माध्यम एवं मूल्य-मापन का कार्य करती है तथा जिसके रूप में धन या संपत्ति का संचय किया जाता है। एक आधुनिक अर्थव्यवस्था में मुद्रा अनेक महत्त्वपूर्ण कार्यों का संपादन करती है। इसके मुख्य कार्य निम्नांकित हैं।

(i) विनिमय का माध्यम - वस्तु-विनिमय में अनेक कठिनाइयाँ और असुविधाएँ होती हैं। मुद्रा के प्रयोग से विनिमय का कार्य अत्यंत सरल हो जाता है। यह विनिमय के माध्यम का कार्य करती है।

(ii) मूल्य को मापने का साधन - मुद्रा का दूसरा महत्त्वपूर्ण कार्य सभी वस्तुओं तथा सेवाओं के मूल्य को मापना है। मुद्रा मूल्य का मापक है। वस्तु-विनिमय प्रणाली के अंतर्गत विभिन्न वस्तुओं के बीच विनिमय का अनुपात निश्चित करना अत्यंत कठिन था। मुद्रा के प्रयोग से यह कठिनाई दूर हो गई है। अब प्रत्येक वस्तु का मूल्य मुद्रा के रूप में व्यक्त किया जाता है। मुद्रा मूल्य को मापने में इकाई का कार्य करती है।

(iii) मूल्य का संचय - अन्य वस्तुओं की अपेक्षा मुद्रा के रूप में मूल्य अथवा संपत्ति का संचय करना अधिक सरल है। वस्तुओं के रूप में संपत्ति का संचय असंभव-सा है, क्योंकि वस्तुएँ शीघ्र नष्ट

हो जा सकती हैं। वस्तुओं का संचय करने के लिए अधिक स्थान की आवश्यकता होती है तथा उनकी देखरेख में भी कठिनाई होती है। मूल्य अथवा धन के संचय के लिए मुद्रा अधिक उपयुक्त है।

(iv) विलंबित भुगतान का मान - मुद्रा विलंबित भुगतान का बड़ा ही सुंगम साधन है। वस्तुओं या सेवाओं के रूप में ऋण, अर्थात उधार लेने और देने का कार्य बहुत असुविधाजनक है। मुद्रा के प्रयोग से ऋण लेने और उसका भुगतान करने में बहुत आसानी हो गई है।

4. मुद्रा के विकास का संक्षिप्त परिचय दें।

उत्तर - मुद्रा के आविष्कार के पूर्व व्यापार वस्तु विनिमय प्रणाली पर आधारित था। लेकिन, वस्तु-विनिमय प्रणाली में कई कठिनाइयाँ थीं तथा इन कठिनाइयों ने ही मुद्रा को जन्म दिया। परंतु, मुद्रा का आविष्कार अचानक नहीं हुआ तथा समय-समय पर मुद्रा के रूप में अनेक वस्तुओं का प्रयोग किया गया। आखेट युग में जानवरों की खाल या चमड़े का, पशुपालन युग में गाय, बैल आदि पशुओं का तथा कृषि युग में कृषि पदार्थों का मुद्रा के रूप में उपयोग किया गया, जिसे वस्तु-मुद्रा की संज्ञा दी गई थी। परंतु, वस्तु-मुद्रा में अनेक दोष थे। वस्तुओं को अधिक समय तक संचित नहीं किया जा सकता, उनमें वहनीयता का अभाव होता है तथा उनके विभाजन में भी कठिनाई उत्पन्न होती है। अतः, मनुष्य ने एक ऐसे मुद्रा-पदार्थ की खोज प्रारंभ की जिनमें उपर्युक्त दोष नहीं हों। धातुओं में ये दोष नहीं थे, इसलिए मुद्रा के विकास के इस चरण में धातुओं का मुद्रा के रूप में प्रयोग किया जाने लगा। विभिन्न देशों में तथा विभिन्न अवसरों पर लोहा, ताँबा, पीतल, सोना, चाँदी आदि प्रायः सभी धातुओं का मुद्रा के रूप में प्रयोग किया गया है। लेकिन, अन्य धातुओं की अपेक्षा सोना और चाँदी मुद्रा के लिए अधिक उपयुक्त थे।

प्रारंभ में सोना और चाँदी के टुकड़ों का ही मुद्रा के रूप में प्रयोग किया जाता था। लेकिन, इसमें बहुत असुविधा थी, क्योंकि प्रत्येक लेन-देन में उनकी शुद्धता की जाँच करनी पड़ती थी और उनका वजन लेना पड़ता था। अतएव, लोगों ने एक निश्चित वजन, आकार एवं शुद्धता के बने हुए सिक्कों का प्रयोग प्रारंभ किया। यह मुद्रा के विकास का अगला चरण था। इन सिक्कों में एकरूपता लाने के लिए बाद में चलकर सरकार ने इनकी ढलाई का एकाधिकार अपने हाथ में ले लिया।

परंतु, कालांतर में उद्योग एवं व्यापार में विकास के साथ-साथ मुद्रा की आवश्यकताओं में भी बहुत वृद्धि हुई। धातुओं की पूर्ति सीमित होने के कारण इस बढ़ती हुई माँग को पूरा करने में कठिनाई

होने लगी। अतः, धातु-मुद्रा के स्थान पर पत्र-मुद्रा का आविष्कार हुआ तथा वर्तमान समय में प्रायः सभी देशों में पत्र-मुद्रा का विनिमय के माध्यम के रूप में प्रयोग किया जाता है।

5. मुद्रा के मुख्य दोष क्या हैं?

उत्तर - मुद्रा एक अमिश्रित वरदान नहीं है। जहाँ मुद्रा से समाज को अनेक लाभ हुए हैं वहीं इससे क्षति भी हुई है। मुद्रा के मुख्य दोष निम्नांकित हैं।

(i) मूल्य में अस्थिरता - मुद्रा का एक प्रमुख दोष इसके मूल्य में होनेवाला परिवर्तन है। मुद्रा के मूल्य में होनेवाले तीव्र एवं अचानक परिवर्तनों का हमारी अर्थव्यवस्था पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। इसके परिणामस्वरूप, उपभोक्ताओं के जीवन-स्तर, उद्योग, व्यवसाय तथा व्यापार में भी उतार-चढ़ाव उत्पन्न होते हैं। इससे समाज की अपार क्षति होती है।

(ii) आय और धन के वितरण में असमानता - मुद्रा के कारण समाज में संपत्ति का वितरण भी प्रभावित होता है। उत्पादन के साधन कुछ ही लोगों के पास एकत्र हो जाते हैं जिससे समाज में आय और धन के वितरण की विषमता बढ़ती है। मुद्रा ने ही समाज को धनी और निर्धन, दो वर्गों में विभाजित कर दिया है।

(iii) व्यापार-चक्रों की उत्पत्ति - मुद्रा के प्रयोग से व्यापार के क्षेत्र में तेजी और मंदी की सृष्टि होती है, जिसे व्यापार-चक्र कहते हैं। व्यापार-चक्र के कारण बचत और विनियोग की मात्रा में होनेवाले परिवर्तन हैं। बचत तथा विनियोग दोनों ही मुद्रा से संबंधित हैं।

(iv) ऋणग्रस्तता में वृद्धि - मुद्रा ने उधार लेने और देने के कार्य को सरल बना दिया है। इससे लोगों को ऋण लेने में प्रोत्साहन मिलता है। परिणामस्वरूप, समाज में ऋणग्रस्तता की मात्रा में वृद्धि हुई है।

6. मुद्रा के मुख्य लाभ क्या हैं? वर्णन करें।

उत्तर - हमारी अर्थव्यवस्था में मुद्रा का स्थान बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है। मुद्रा के मुख्य लाभ निम्नांकित हैं।

(i) उपभोक्ता को लाभ - मुद्रा के रूप में आय प्राप्त होने पर कोई भी व्यक्ति अपनी इच्छा एवं सुविधानुसार उसे खर्च कर सकता है। मुद्रा के द्वारा क्रय-शक्ति ऐसे रूप में होती है जिसका हम जिस

प्रकार चाहें, उपयोग कर सकते हैं। यह उपभोक्ताओं को अपनी सीमित आय से अधिकतम संतोष प्राप्त करने में सहायता करती है।

(ii) उत्पादकों को लाभ - उत्पादकों को भी मुद्रा से अनेक लाभ प्राप्त होते हैं। मुद्रा के प्रयोग से ही आज बड़े पैमाने पर उत्पादन संभव हुआ है। उत्पादकों को मुद्रा के द्वारा उत्पादन के विभिन्न साधनों को जुटाने, कच्चा माल खरीदने, श्रमिकों को पारिश्रमिक देने तथा पूँजी उधार लेने में बहुत आसानी हो गई है।

(iii) विनिमय के क्षेत्र में लाभ - मुद्रा के आविष्कार से वस्तु-विनिमय प्रणाली की सभी कठिनाइयाँ समाप्त हो गई हैं। मुद्रा विनिमय का सर्वमान्य साधन है।

(iv) वितरण के क्षेत्र में लाभ - वर्तमान समय में वस्तुओं का उत्पादन कई साधनों के सहयोग से होता है। उत्पादन के विभिन्न साधनों की सीमांत उत्पादकता को मापने का कार्य मुद्रा के द्वारा ही होता है। इन साधनों का पुरस्कार या पारिश्रमिक भी मुद्रा के रूप में दिया जाता है। इस प्रकार, मुद्रा राष्ट्रीय आय के वितरण में सहायता करती है।

(v) राजस्व के क्षेत्र में लाभ - मुद्रा से राजस्व के क्षेत्र में भी बहुत सहायता मिलती है। सरकार करों के रूप में जनता से आय प्राप्त करती है और इसे लोककल्याण के कार्यों पर खर्च करती है। मुद्रा के प्रयोग से ये दोनों ही कार्य सरल हो जाते हैं।

3. मुद्रा, बचत एवं साख

1. आधुनिक युग को प्रगति का श्रेय मुद्दा कोह है यह कथन किसका है ?

(A) ट्रेस्कॉट

(B) मार्शल

(C) क्राउधर

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans - (B)

2. मुद्रा का प्राथमिक कार्य है -

(A) मूल्य का हस्तांतरण

(B) विनिमय का माध्यम

(C) विलचित भुगतान का मान

(D) मूल्य का संचय

Ans - (B)

3. मुद्रा के कार्य हैं -

(A) मापन

(B) संचय

(C) भुगतान

(D) इनमें सभी

Ans - (D)

4. इनमें से कौन मुद्रा के कार्य नहीं हैं?

(A) माध्यम

(B) मापन

(C) भुगतान

(D) लेखन एवं संपादन/उत्पादन

Ans - (D)

5. मुद्रा का प्राथमिक कार्य कौन-सा है?

(A) मूल्य का संचय

(B) विलंबित भुगतान का मान

(C) मूल्य का हस्तांतरण

(D) विनिमय का माध्यम

Ans - (D)

6. बांग्लादेश की मुद्रा का क्या नाम है?

(A) रुपया

(B) डॉलर

(C) टका

(D) दीनार

Ans - (C)

7. सभ्यता के प्रारम्भिक अवस्था में मुद्रा का प्रयोग निम्न में से किस-किस रूप में होता था?

(A) गेहूँ

(B) गाय

(C) भुगतान पत्र

(D) A एवं B दोनों

Ans - (D)

8. इनमें से कौन - सी मुद्रा संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रचलित है?

(A) रियाल

(B) दिनार

(C) पाण्ड

(D) डॉलर

Ans - (D)

9. वस्तु - विनिमय प्रणाली की मुख्य कठिनाई थी -

(A) आवश्यकताओं के दोहरे संयोग का अभाव

(B) मूल्यमापन की कठिनाई

(C) दोनों

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans - (B)

10. निम्न में से किस प्रणाली के अंतर्गत आवश्यकताओं के दोहरे संयोग का अभाव होता है?

(A) मुद्रा प्रणाली

(B) वस्तु-विनिमय प्रणाली

(C) दोनों में

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans - (B)

11. प्रारम्भिक अवस्था में मनुष्य का व्यापार किस पर आधारित था?

(A) साख

(B) वस्तु विनिमय

(C) धातु मुद्रा

(D) मोल-जोल

Ans - (B)

12. विनिमय के कितने रूप हैं?

(A) दो

(B) तीन

(C) चार

(D) इनमें कोई नहीं

Ans - (A)

13. 'रुपया' किस देश की मुद्रा है?

(A) भारत

(C) नेपाल

(B) पाकिस्तान

(D) इनमें से सभी

Ans - (D)

14. विनिमय का सर्वोच्च माध्यम है

(A) वस्तु

(B) चेक

(C) मुद्रा

(D) प्रतिज्ञापत्र

Ans - (C)

15. वस्तु विनिमय प्रणाली की निम्न में से कौन-सी कठिनाइयों हैं?

(A) वस्तु विभाजन में कठिनाई

(B) सर्वमान्य मूल्य मापक का अ

(C) दोहरे संयोग का अभाव

(D) उपर्युक्त सभी

Ans - (D)

16. प्राचीन युग में विनिमय की कौन सी प्रथा प्रचलित थी?

(A) वस्तु विनिमय

(B) मौद्रिक विनिमय

(C) A और B दाना

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans - (A)

17. विनिमय के कौन से रूप है?

(A) वस्तु विनिमय

(B) मौद्रिक चिनिय

(C) A और B दाना

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans - (C)

18. "मुद्रा वह है जो मूल्य का मापक और का साधन हैं।" यह किसका कथन है?

(A) सेलिगमैन

(B) कोलबर्न

(C) क्राउथर

(D) नैप का

Ans - (B)

19. निम्न में से कौन-सा मुद्रा का एक आधुनिक रूप नहीं है?

(A) मुद्रा

(B) जमा

(C) ड्राफ्ट

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans - (B)

20.प्राचीन काल में किस धातु का मुद्रा के का सर्वाधिक प्रयोग हुआ?

(A) लोहा का

(B) ताँबा का

(C) पीतल का

(D) चाँदी और सोना

Ans - (D)

21. हमारे देश में किस मुद्रा को वैधानिक मान्दर प्राप्त है?

(A) वस्तु मुद्रा

(B) साख-मुद्रा

(C) पत्र-मुद्रा

(D) चेक

Ans - (C)

22. निम्नांकित में कौन विधि ग्राह्य मुद्रा है?

(A) चेक

(B) ड्राफ्ट

(C) 10 रुपये का नोट

(D) इनमें सभी

Ans - (C)

23. आजकल मुद्रा का कौन-सा रूप अधिक प्रचलन में है?

(A) धात्विक मुद्रा

(B) सोने के सिक्के

(C) पत्र-मुद्रा

(D) उपर्युक्त सभी

Ans - (C)

24. मुद्रा का प्राचीनतम रूप है-

(A) धातु-मुद्रा

(B) सिक्के

(C) वस्तु-मुद्रा

(D) पत्र-मुद्रा

Ans - (C)

25. मुद्रा विनिमय का क्या है?

(A) माध्यम

(B) रूप

(C) साधन

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans - (A)

26. निम्न में किसके अनुसार "मुद्रा वह है जो मुद्रा का कार्य करती है ?"

(A) हार्टले विदर्स

(B) हाट्रे

(C) केन्स

(D) प्रो० टामस

Ans - (A)

27. निम्नलिखित में से कौन प्लास्टिक मुद्रा के रूप में प्रचलित है ?

(A) चेक

(B) ड्राफ्ट

(C) कागजी नोट

(D) ए०टी०एम० कार्ड

Ans - (D)

28. किस धातु का सर्वाधिक प्रयोग मुद्रा के रूप में हुआ है?

(A) लोहा

(B) ताँबा

(C) पीतल

(D) चाँदी और सोना

Ans - (D)

29. सिक्कों का सबसे पहला प्रयोग कहाँ हुआ था?

(A) लदन

(B) चीन

(C) लोबिया

(D) यूनान

Ans - (C)

30. रुपये का नया प्रतीक है -

(A) रू०

(B) र

(C) आर

(D) ₹

Ans - (D)

31. एक रुपये का नोट जारी किया जाता है -

(A) रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया द्वारा

(B) केंद्रीय सरकार द्वारा

(C) सेंट्रल बैंक ऑफ इण्डिया द्वारा

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans - (D)

32. देश का पहला ATM किस बैंक ने स्थापित किया?

(A) बैंक ऑफ इंडिया

(B) रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया

(C) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया

(D) सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया

Ans - (C)

33. आधुनिक युग की अर्थव्यवस्था की प्रगति का श्रेय किसको दिया जा सकता है?

(A) मुद्रा को

(B) उद्योग को

(C) कृषि को

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans - (A)

34. किस धुरी के चारों तरफ सम्पूर्ण आर्थिक विज्ञान चक्कर काटता है?

(A) उत्पादन

(B) आय

(C) मुद्रा

(D) लाभ

Ans - (C)

35. मुद्रा के निम्न महत्त्व हैं -

(A) मुद्रा और औद्योगिक प्रगति

(B) आय का समुचित उपयोग

(C) भौतिक उन्नति का साधन

(D) उपर्युक्त सभी

Ans - (D)

36. किसने कहा था कि आधुनिक विश्व में उद्योग मुद्रारूपी वस्त्र धारण किए हुए है?

(A) क्राउथर

(B) मार्शल

(C) पीगू

(D) ट्रेस्कॉट

Ans - (C)

37. किसने कहा था कि "कर्ज जमा की संतान है और जमा कर्ज की संतान है?"

(A) कन्स

(B) मार्शल

(C) पौगू

(D) क्राउथर

Ans - (A)

38. निम्न में से कौन साख पत्र के अंतर्गत नहीं आता?

(A) चेक

(C) हुण्डो

(B) बैंक ड्राफ्ट

(D) कागजी मुद्रा

Ans - (D)

39. साख के पक्ष कौन-कौन से हैं?

(A) ऋण दाता

(B) ऋणी

(C) दोनों

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans - (C)

40. साख के मुख्य आधार होते हैं-

(A) ऋण की राशि

(B) समय

(C) व्यक्ति का चरित्र

(D) उपर्युक्त तीनों

Ans - (D)

41. आय एवं उपभोग के अंतर को क्या कहते हैं?

(A) बचत

(B) मुद्रा

(C) व्यय

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans - (A)

42. निम्नलिखित में से साख पत्र के अन्तर्गत कौन आता है?

(A) चेक

(B) बैंक ड्राफ्ट

(C) यात्री चेक

(D) इनमें से सभी

Ans - (D)

43. साख का संबंध है-

(A) गरीबी से

(B) उधार से

(C) दोनों से

(D) विश्वास से

Ans - (C)

44. साख का अर्थ है -

(A) विश्वास करना

(B) ऋण लौटाने की क्षमता

(C) A एवं B दोनों

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans - (C)

45. इनमें से कौन साख का आधार नहीं है ?

(A) विश्वास

(B) शिक्षा

(C)चुकाने की क्षमता

(D) ऋण की अवधि

Ans - (B)

46. बचत को प्रभावित करनेवाले प्रमुख तत्व हैं -

(A) बचत करने की क्षमता

(B) बचत करने की इच्छा

(C) बचत करने की सुविधाएं

(D) इनमें से तीनों ही

Ans - (D)